



Original Article

कोरोनाकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

आर्या एम. वी.

शोधार्थी

हिंदी विभाग एवं शोध केंद्र, राजकीय महिला महाविद्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल विश्वविद्यालय

Manuscript ID:

IJAAR-C130322

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 105 - 108

Submitted: 18 Jan.2026

Revised: 26 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

आर्या एम. वी.

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785586

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785586>



Creative Commons



सार:

कोरोना काल में लॉकडाउन, बेरोजगारी और भय के कारण परिवारों में कई समस्याएं उत्पन्न हुई। मानसिक तनाव बढ़ा, पति-पत्नी के बीच मतभेद बढ़ गई और कई स्थानों पर घरेलू हिंसा के मामले भी बढ़े हैं। कोरोना काल में मानव जाति को अकेलापन महसूस हुआ तथा बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित हुई। हिंदी साहित्य और सिनेमा ने इन पारिवारिक समस्याओं को यथार्थ और संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य और सिनेमा के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि कठिन समय में आपसी समझ, सहयोग और सहानुभूति परिवार को मजबूत बनाते हैं।

मुख्य शब्द: कोरोनाकाल, लॉकडाउन, मानसिक द्वंद्व, अकेलापन।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

आर्या एम. वी. (2026). कोरोनाकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 105 - 108. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785586>

प्रस्तावना:

साहित्य समाज का संवेदनात्मक इतिहास होता है। वह केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि मनुष्य के भीतर घटने वाली अनुभूतियों, मानसिक द्वंद्वों और सामाजिक बदलावों को भी व्यक्त करता है। कोरोना महामारी का समय

एक ऐसा ही असाधारण कालखंड था, जिसमें जीवन की सहजता नष्ट हो गई। इंसान अपने-अपने घरों तक सिमट गये, समाज के पारंपरिक संपर्क टूट गये, मृत्यु का भय सर्वत्र फैल गया और मनुष्य के कई अनदेखे रूप सामने आए। ऐसे समय में हिंदी साहित्य ने तत्कालीन जीवन-सत्य को सामने रखते हुए



मानसिक संकटों की मार्मिक तस्वीर प्रस्तुत की। कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया के जीवन को बदल दिया। इस समय केवल स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था ही प्रभावित नहीं हुए, बल्कि परिवारों के जीवन में भी कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुईं। लॉकडाउन, बेरोज़गारी, भय और अनिश्चितता के कारण घरों का वातावरण भी बदल गया। हिंदी साहित्य और सिनेमा ने इस स्थिति को बहुत ही यथार्थ और संवेदनशील रूप में प्रस्तुत किया है।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. कोरोनाकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याओं को समझना।
2. महामारी के समय परिवारों में उत्पन्न मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक तनाव का विश्लेषण करना।
3. साहित्य और सिनेमा के माध्यम से समाज की वास्तविक परिस्थितियों को पहचानना।
4. यह जानना कि संकट के समय परिवारों के संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

विषय विवेचन:

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्यकार अपनी लेखनी से जो विचार व्यक्त करता है वह निश्चित ही सृष्टि है। साहित्य और समाज का अंतर्संबंध इतना गहरा है कि प्राचीन से लेकर वर्तमान तक हर काल का इतिहास समझने में साहित्य एक माध्यम के रूप में अवस्थित है। पारिवारिक समस्याएँ वे कठिनाइयाँ या तनावपूर्ण स्थितियाँ हैं जो परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों, जिम्मेदारियों या परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती हैं। जब परिवार में समझ, सहयोग या संतुलन कम हो जाता है, तब ऐसी समस्याएँ दिखाई देती हैं।

कोरोना महामारी 21वीं सदी की सबसे बड़ी वैश्विक त्रासदी के रूप में सामने आई। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोनावायरस को महामारी घोषित कर दिया। श्रीमती मनोरमा अग्रवाल के अनुसार "महामारी भीषण से भीषणतर और भीषणतम की ओर भासमान है।" (1) यह केवल मनुष्य के स्वास्थ्य को ही नहीं बल्कि मनुष्य के सामाजिक जीवन, मानसिक संतुलन, आर्थिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों पर भी गहरा छाप छोड़ गया। इस वैश्विक महामारी ने अपने समय को तो प्रभावित किया ही है हमारे भविष्य को विचलित कर दिया है इसलिए समाज और साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है।

कोरोनाकाल में मानसिक संकट प्रबल होने का मुख्य कारण बढ़ते संक्रमण और मृत्यु संख्या थी। यह मनुष्यों को भयग्रस्त किया। अस्पताल में बिस्तरों की कमी, ऑक्सीजन की कमी तथा सहायता करने में वैमनस्य आदि मनुष्य को गहराई में धकेल दिया। कुशलेंद्र श्रीवास्तव की 'कोरोना निगेटिव' नामक कहानी में कहानीकार ने कोरोना के कारण परिवारवालों में उत्पन्न होनेवाली भय का चित्रण इस प्रकार किया है "घर को कोई भी आनंद के नज़दीक नहीं आ रहा था। अरे अभी तो मैं कोरोना का मरीज बताया ही नहीं गया हूँ फिर भी.....। पर कोई उनसे दूर रहने में ही भलाई समझ रहा था।" (2) मृत्यु भय ने परिवारवालों को भी एक-दूसरे से बात करने या सहारा देने में हिचक पैदा कर दी। लॉकडाउन ने मनुष्य को समाज से अलग किया। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति एक-दूसरे से अलग हुए। फलस्वरूप उन्हें अकेलापन को भोगना पड़ा। डॉ. बलराम गुप्ता ने 'कोरोना काल' नामक कविता में यह व्यक्त किया है:

“घर पर सक्रिय

बाहर की गतिविधि निष्क्रिय

महामारी छूत की



संपर्क अपराध हुआ” (3)

कोरोना ने मानव जीवन में संपर्क निषेध किया, इसके फलस्वरूप सामाजिक दूरी और अकेलापन बढ़ता गया।

लॉकडाउन तथा कोरोना ने हरेक व्यक्ति के मन में चिंता, तनाव तथा अनिश्चितता को जन्म दिया। रोजगार, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आर्थिक स्थिति इन सब बातों ने साधारण आम जनता को चिंता में डाला दिया और उनके मन में तनाव बढ़ने लगी। ज़हीर कुरेशी की कहानी ‘दर-ब-दर’ में सावित्री और रामशरण को अपने बच्चों की भविष्य को लेकर चिंता निरंतर सताती है। क्योंकि बच्चों की पढ़ाई रुक गई तथा ऑनलाइन शिक्षा का साधन न होने से ग्रामीण परिवारों के बच्चे पीछे रह गए। उषा यादव अपने उपन्यास ‘कितने धूमकेतु’ के रामरतन नामक पात्र के सहारे कोरोना काल की त्रासद स्थितियों रूबरू कराता है। जैसे मानव की मानसिक संकट, अकेलापन, भय, रिश्तों में दूरी, आत्म संघर्ष तथा समाज से मोहभंग आदि से रूबरू कराया है। यह संकट व्यक्ति के साथ-साथ सामाजिक चेतना को भी प्रभाव डाला है।

‘एलोन’ एक मलयालम थ्रिलर फिल्म है। यह फिल्म कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान पैदा हुई अकेलापन, मानसिक तनाव और परिवार से दूरी जैसे मुद्दों को दर्शाती है। इस फिल्म में नायक कालिदासन एक प्लैट में अकेला रहता है। लॉकडाउन के कारण लोग अपने घरों में सीमित हो जाते हैं। जिससे कालिदासन को गहरा अकेलापन और मानसिक तनाव महसूस होता है। यह फिल्म महामारी के दौरान बहुत से लोगों की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। कालिदासन को कोविड प्रतिबंधों के कारण परिवार और दोस्तों से सीधा मिलना संभव नहीं होता। इसलिए बातचीत केवल फोन या डिजिटल माध्यम से होती है, जिससे भावनात्मक दूरी का अनुभव होता है। कालिदासन इस कोरोना महामारी में अपने परिवार से दूर रहने

के कारण भय, मानसिक तनाव और अकेलापन का शिकार बनता है।

कोरोना कालीन हिंदी साहित्य में मानसिक संकट के साथ-साथ पारिवारिक समस्याओं का भी अभिव्यक्ति हुई है। अचानक लगे लॉकडाउन के कारण लोग घरों में सीमित हो गए। कई लोगों की नौकरी चली गई। इसका असर परिवार के संबंधों पर पड़ा। पति-पत्नी के बीच तनाव, चिंता और असुरक्षा की भावना बढ़ने लगी। कुशलेंद्र श्रीवास्तव की कहानी ‘कोरोना निगेटिव’ में आनंद नामक पात्र के माध्यम से कहानीकार इस स्थिति का रूबरू करता है। “वे अपने ही घर में एकाकी हो चुके थे। दिन भर घर में न रहने से परिवार के लोगों के बीच में अपरिचित जैसे हो गए थे। बच्चे उनसे तब ही बात करते जब बहुत जरूरी होता। पत्नी भी उनकी जेबें टटोलती और गिलास भर पानी देने के अलावा कभी पास भी आकर नहीं बैठती थी।” (4) लॉकडाउन के कारण उनका काम बंद हो गया। इससे उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और परिवार के लोगों के तिरस्कारपूर्ण व्यवहार ने उनके मन में गहरी पीड़ा पैदा कर दी। कुशलेंद्र श्रीवास्तव की ‘कोरोना पॉजिटिव माँ’ कहानी के माध्यम से कहानीकार यह दिखाने की कोशिश करता है कि जब कोरोना से मुक्त माँ वृद्धाश्रम से अपने घर वापस आती है, तब उसका इकलौता बेटा भी उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता। इस प्रकार लेखक पारिवारिक विडंबना का चित्रण करते हुए यह बताना चाहता है कि आज के समय में रिश्तों का मूल्य कम होता जा रहा है।

आगे महत्वपूर्ण समस्या घरेलू हिंसा की थी। जब लोग लंबे समय तक घरों में रहे, तब कई परिवारों में झगड़े और हिंसा की घटनाएँ बढ़ीं। विशेष रूप से महिलाओं को इसका अधिक सामना करना पड़ा। हिंदी साहित्य में कई लेखकों ने स्त्री की पीड़ा, उसके संघर्ष और उसकी सहनशीलता को प्रभावशाली



ढंग से व्यक्त किया है। सिनेमा में भी यह दिखाया गया कि महामारी के समय घर हमेशा सुरक्षित स्थान नहीं रहा। वुल्फ (2021) एक मलयालम सस्पेंस थ्रिलर है। यह कोरोना लॉकडाउन और रिश्तों का तनाव पर आधारित है। फिल्म में संजय अपनी मंगेतर आशा को सरप्राइज देने के लिए उसके घर में पहुंचता है। इस समय अचानक देश भर में लॉकडाउन घोषित हो जाता है। कड़े पुलिस नियमों के कारण वह वापस नहीं जा पाता और दोनों को एक ही घर में रहना पड़ता है। इससे उनके रिश्ते के अंदर छिपे तनाव सामने आने लगते हैं। एक ही घर में रहने वाले इन लोगों की असलियत का पता चल जाता है। इसलिए संजय अपने मंगेतर आशा को मारपीट करता है। संजय का गुस्सैल और अधिकार जताने वाला स्वभाव रिश्ते में समस्या पैदा करता है। विवाह के पहले ही आशा घरेलू हिंसा का शिकार बन जाती है। जहीर कुरेशी की दर-ब-दर कहानी के माध्यम से कहानीकार यह प्रस्तुत करना चाहता है कि सावित्री जैसे पात्र न केवल घर संभाल रही थी, बल्कि परिवार की आर्थिक बोझ को भी बांटने की कोशिश कर रही थी। महामारी में महिलाओं पर घर और बाहर दोनों जगह का दबाव बढ़ गया।

निष्कर्ष:

कोरोनाकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा ने पारिवारिक जीवन की वास्तविक समस्याओं को सामने लाया है। इन रचनाओं में परिवारों का तनाव, संघर्ष, अकेलापन और आपसी संबंधों की परीक्षा स्पष्ट दिखाई देती है। साथ ही यह भी दिखाया गया है कि कठिन समय में परिवार का सहयोग, समझ और संवेदनशीलता ही सबसे बड़ी ताकत बन सकती है। अंततः कहा जा सकता है कि कोरोना काल ने समाज को बहुत कुछ सिखाया। हिंदी साहित्य और सिनेमा ने इस दौर को सच्चाई के साथ प्रस्तुत करके आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज तैयार किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. श्रीमती मनोरमा अग्रवाल, इक्कीसवीं सदी का जहर कोरोना का कहर..., पृष्ठ -5
2. कुशलेंद्र श्रीवास्तव, कोरोना निगेटिव, पृष्ठ -11
3. डॉ. बलराम गुप्ता, कोरोना युग वैश्विक महामारी बहुरूपिया, पृष्ठ -10
4. कुशलेंद्र श्रीवास्तव, कोरोना निगेटिव, पृष्ठ -9